इकाई 1

वित्तीय लेखांकन और साझेदारी खाते

अंतर्वस्तु

लेखांकन की प्रकृति, अवधारणाएँ और परंपराएँ....9
- अर्थ और परिभाषाएँ....9
- बहीखाता, लेखा और लेखाकर्म....9
- लेखांकन के उद्देश्य और कार्य....9
- लेखांकन सूचना के उपयोगकर्ता....10
- लेखांकन सूचना की गुणात्मक विशेषताएं....10
- लेखांकन की शाखाएँ....11
- **अकाउंटिंग का आधार**: कैश बनाम एक्रुअल....11
- सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांत (GAAP)....12
- अकाउंटिंग कॉन्सेप्ट्स समझाए गए....12
- अकाउंटिंग कन्वेंशन की व्याख्या....14
- अवधारणाएँ बनाम परंपराएँ....15
- एक भाषा के रूप में अकाउंटिंग और इसकी सीमाएँ....15
- लेखांकन का विकास....15
- लेखांकन सिद्धांत दृष्टिकोण....16
- अकाउंटेंट की भूमिका और प्रोफेशनल एथिक्स....16
- लेखांकन और प्रौद्योगिकी....16
- प्रैक्टिस में कॉन्सेप्ट्स — कौन सा कॉन्सेप्ट लागू होता है?....17

डबल एंट्री सिस्टम और अकाउंटिंग इक्वेशन....19
- उत्पत्ति और अर्थ....19
- डबल एंट्री सिस्टम की विशेषताएं....19
- लाभ और सीमाएँ....19
- सिंगल एंट्री बनाम डबल एंट्री....20
- लेखांकन समीकरण....20
- खातों का वर्गीकरण....21
- **डेबिट और क्रेडिट**: मतलब....22
- जीएसटी के लिए लेखांकन....23

जर्नल, सहायक पुस्तकें, लेजर और ट्रायल बैलेंस....26
- लेखांकन चक्र....26
- जर्नल....26
- सहायक पुस्तकें (विशेष पत्रिकाएँ)....27
- बहीखाता....28
- संतुलन परीक्षण....29
- विनिमय पत्र - आवश्यक बातें....32

त्रुटियों का सुधार और बैंक समाधान विवरण....36
- त्रुटियों का वर्गीकरण....36
- उचंति खाता....36
- फ़ाइनल अकाउंट तैयार करने से पहले और बाद में सुधार....36
- बैंक समाधान विवरण (बीआरएस)....38
- गलतियों की प्रकृति की पहचान करना — अभ्यास तालिका....40
- सकल लाभ, शुद्ध लाभ और बैलेंस शीट पर त्रुटियों का प्रभाव....41

कैपिटल और रेवेन्यू; एडजस्टमेंट के साथ फाइनल अकाउंट्स....43
- पूंजीगत और राजस्व व्यय....43
- पूंजी और राजस्व प्राप्तियां....43

एकल व्यापारी के अंतिम खाते 43
एडजस्टमेंट — दोहरा असर 45
समापन प्रविष्टियाँ 48
कैपिटल या रेवेन्यू? आम एग्जाम केस 48
अधूरे रिकॉर्ड: स्टेटमेंट ऑफ़ अफेयर्स मेथड 49
गैर-लाभकारी संगठन और विशेष लेनदेन 52
गैर-लाभकारी संगठन (एनपीओ) 52
माल खाते 53
संयुक्त उद्यम खाते 55
किराया खरीद और किस्त प्रणाली 56
लेखांकन मानक ढांचा: एएस और इंड एएस 58
अर्थ और आवश्यकता 58
भारत में मानक-निर्धारण मशीनरी 58
मानकों के दो सेट 58
इस यूनिट और यूनिट 2 के लिए सबसे ज़्यादा प्रासंगिक मानक 59
संकल्पनात्मक ढांचा (इंड एएस) 60
AS 2 / Ind AS 2 के अंतर्गत इन्वेंटरी मूल्यांकन 61
रेवेन्यू रिकग्निशन: AS 9 बनाम Ind AS 115 61
27 अकाउंटिंग स्टैंडर्ड्स (कंपनी (अकाउंटिंग स्टैंडर्ड्स) रूल्स, 2021) 62
इंड एएस सेट पर एक नज़र 62
पार्टनरशिप: बुनियादी बातें और प्रॉफ़िट का बंटवारा 65
परिभाषा और आवश्यक विशेषताएं 65
साझेदारी विलेख 65
डीड के अभाव में लागू प्रावधान (धारा 13) 66
साझेदारों के पूंजी खाते 66
लाभ और हानि विनियोग खाता 66
पूंजी पर ब्याज 67
आहरण पर ब्याज 67
पार्टनर का कमीशन और वेतन 68
पार्टनर को मुनाफ़े की गारंटी 69
पिछले समायोजन 70
पार्टनरशिप, LLP और कंपनी की तुलना 70
भागीदारों के प्रकार 71
फर्म द्वारा दी गई गारंटी और फर्म को दी गई गारंटी 72
प्रॉफ़िट-शेयरिंग रेश्यो में बदलाव: बिना बुक्स को परेशान किए रिज़र्व और रीवैल्यूएशन 72
साझेदारी फर्मों का कराधान (रूपरेखा) 74
पार्टनर की पूंजी बनाम पार्टनर का ऋण 74
सद्भावना: प्रकृति और मूल्यांकन 76
अर्थ 76
सद्भावना के प्रकार 76
सद्भावना को प्रभावित करने वाले कारक 76
पार्टनरशिप में वैल्यूएशन की ज़रूरत 77
मूल्यांकन के तरीके 77
छिपी (अनुमानित) सद्भावना 79
एवरेजिंग से पहले पिछले प्रॉफिट में एडजस्टमेंट 79
इस्तेमाल की गई पूंजी: दो तरीके 79
भागीदार का प्रवेश 82
एक फर्म का पुनर्गठन 82

एडमिशन के समय ज़रूरी एडजस्टमेंट 82
मौजूदा पार्टनर्स के बीच प्रॉफ़िट-शेयरिंग रेश्यो में बदलाव 82
एडमिशन पर नया प्रॉफ़िट-शेयरिंग रेश्यो और सैक्रिफ़ाइसिंग रेश्यो 83
प्रवेश पर सद्भावना का उपचार 84
परिसंपत्तियों और देनदारियों का पुनर्मूल्यांकन 85
संचित लाभ, भंडार और घाटे 85
राजधानियों का समायोजन 85
एडमिशन पर गुडविल के स्पेशल केस 87
पार्टनर की रिटायरमेंट और मौत 90
कानूनी स्थिति 90
सेवानिवृत्ति/मृत्यु पर समायोजन 90
लाभ अनुपात 90
सेवानिवृत्ति/मृत्यु पर सद्भावना का उपचार 91
पुनर्मूल्यांकन और आरक्षित निधि 91
मृत्यु या सेवानिवृत्ति की तिथि तक लाभ का हिस्सा 91
संयुक्त जीवन पॉलिसी (जेएलपी) 91
देय राशि का निपटान 92
रिटायरमेंट पर छिपी हुई सद्भावना 94
सतत भागीदारों की पूंजी का समायोजन 94
मृत्यु: मृत्यु की तारीख तक अकाउंट तैयार होने पर ट्रीटमेंट 94
रिटायरमेंट बनाम मौत — अंतर के बिंदु 95
साझेदारी फर्म का विघटन 97
साझेदारी का विघटन बनाम फर्म का विघटन 97
फर्म के विघटन के तरीके (धारा 40-44) 97
खातों का निपटान (धारा 48) 97
प्राप्ति खाता 98
पार्टनर का दिवालियापन: गार्नर बनाम मुरे (1904) 100
विघटन पर अन्य स्थितियाँ 101
जब सभी पार्टनर दिवालिया हो जाएं 102
साझेदारी फर्मों का एकीकरण 102
पुनर्मूल्यांकन खाता बनाम वसूली खाता 103
तुलनात्मक अवधारणाएँ और लेखांकन सिद्धांत 105
वित्तीय, लागत और प्रबंधन लेखांकन 105
प्रावधान बनाम आरक्षित निधि 105
पूंजीगत लाभ बनाम राजस्व लाभ 106
स्वामित्व के लेखांकन सिद्धांत 106
ऐतिहासिक लागत और मुद्रास्फीति लेखांकन 107
मानव संसाधन और सामाजिक लेखांकन 108
विंडो ड्रेसिंग और क्रिएटिव अकाउंटिंग 108
मूल्य वर्धित विवरण 108
अकाउंटिंग प्रॉफ़िट बनाम टैक्सेबल प्रॉफ़िट 109
अकाउंटिंग पॉलिसी, अनुमान और गलतियां (AS 5 / Ind AS 8) 110

यह यूनिट UP PGT (लेक्चरर) कॉमर्स सिलेबस के सेक्शन-A के अकाउंटिंग पार्ट का पहला आधा हिस्सा कवर करती है: डबल एंट्री सिस्टम के प्रिंसिपल, एडजस्टमेंट के साथ फाइनल अकाउंट और पार्टनरशिप अकाउंट। इसमें UP TGT कॉमर्स सिलेबस का आइटम 1 भी शामिल है: कॉन्सेप्ट और कन्वेंशन, डबल एंट्री सिस्टम (जर्नल, लेजर, ट्रायल बैलेंस), एडजस्टमेंट एंट्री के साथ फाइनल अकाउंट, पार्टनरशिप अकाउंट (एडमिशन, रिटायरमेंट और डेथ) और इंडियन अकाउंटिंग स्टैंडर्ड। कंपनी अकाउंट और डेप्रिसिएशन के बारे में यूनिट 2 में बताया गया है। Ind AS को यूनिट 14 में पूरी तरह से बताया गया है, इसलिए यहां सिर्फ फ्रेमवर्क ही कवर किया गया है।

अध्याय	सिलेबस एंकर	परीक्षा भार
1. अकाउंटिंग की प्रकृति, कॉन्सेप्ट और कन्वेंशन	टीजीटी 1; पीजीटी ए	बहुत ज़्यादा (थ्योरी MCQs)
2. डबल एंट्री सिस्टम और अकाउंटिंग इक्वेशन	PGT A “डबल अकाउंटिंग सिस्टम के सिद्धांत”; TGT 1	बहुत ऊँचा
3. जर्नल, सहायक पुस्तकें, लेजर और ट्रायल बैलेंस	टीजीटी 1	उच्च
4. गलतियों को सुधारना और बैंक समाधान	टीजीटी 1; पीजीटी ए	मध्यम ऊँचाई
5. कैपिटल और रेवेन्यू; एडजस्टमेंट के साथ फाइनल अकाउंट्स	पीजीटी ए; टीजीटी 1	बहुत उच्च (संख्यात्मक)
6. नॉट-फॉर-प्रॉफिट ऑर्गनाइज़ेशन और स्पेशल ट्रांज़ैक्शन	TGT 1; PGT A (फाइनेंशियल अकाउंटिंग)	मध्यम
7. लेखा मानक ढांचा: एएस और इंड एएस	टीजीटी 1 “भारतीय लेखा मानक”	उच्च
8. पार्टनरशिप: बुनियादी बातें और प्रॉफ़िट का बंटवारा	पीजीटी ए; टीजीटी 1	बहुत ऊँचा
9. गुडविल: नेचर और वैल्यूएशन	पीजीटी ए; टीजीटी 1	उच्च
10. पार्टनर का एडमिशन	पीजीटी ए; टीजीटी 1	बहुत ऊँचा
11. पार्टनर का रिटायरमेंट और मृत्यु	पीजीटी ए; टीजीटी 1	बहुत ऊँचा
12. पार्टनरशिप फर्म का विघटन	पीजीटी ए	उच्च
13. तुलनात्मक अवधारणाएँ और लेखांकन सिद्धांत	पीजीटी ए (सिद्धांत)	मध्यम

लेखांकन की प्रकृति, अवधारणाएँ और परंपराएँ

अर्थ और परिभाषाएँ

किसी इकोनॉमिक एंटिटी के बारे में फाइनेंशियल जानकारी को **पहचानने, मापने, रिकॉर्ड करने, क्लासिफ़ाई करने, समराइज़ करने, एनालाइज़ करने, इंटरप्रेट करने और उसके यूज़र्स तक पहुंचाने** की कला और साइंस है।

- **एआईसीपीए (1941):** "लेखा एक महत्वपूर्ण तरीके से और धन, लेनदेन और घटनाओं के संदर्भ में रिकॉर्डिंग, वर्गीकरण और सारांशित करने की कला है, जो कम से कम आंशिक रूप से एक वित्तीय चरित्र के हैं, और इसके परिणामों की व्याख्या करते हैं।"
- **अमेरिकन अकाउंटिंग एसोसिएशन (1966):** "लेखा, आर्थिक जानकारी की पहचान करने, मापने और संचार करने की प्रक्रिया है ताकि सूचना के उपयोगकर्ताओं द्वारा सूचित निर्णय और निर्णय लिए जा सकें।"
- **अकाउंटिंग प्रिंसिपल्स बोर्ड, APB स्टेटमेंट नंबर 4 (1970):** अकाउंटिंग एक सर्विस एक्टिविटी है जिसका काम इकोनॉमिक एंटिटीज़ के बारे में क्वांटिटेटिव जानकारी, मुख्य रूप से फाइनेंशियल नेचर की, देना है, जिसका मकसद इकोनॉमिक फैसले लेने में उपयोगी होना है।

फ़ैसले लेने के लिए जानकारी के कम्युनिकेशन पर ज़ोर देती है (इन्फॉर्मेशन सिस्टम या यूज़र-ओरिएंटेड व्यू)। एग्जामिनर अक्सर पूछते हैं कि कौन सी परिभाषा "पहचान करने, मापने और कम्युनिकेट करने" पर ज़ोर देती है: इसका जवाब है AAA (1966)।

बहीखाता, लेखा और लेखाकर्म

आधार	बुक कीपिंग	लेखांकन	लेखाकर्म
दायरा	रिकॉर्डिंग और वर्गीकरण (जर्नल, लेजर)	बुक-कीपिंग + सारांश बनाना, विश्लेषण करना, व्याख्या करना	ज्ञान का पूरा ढांचा (सिद्धांत + अभ्यास)
अवस्था	प्राथमिक चरण	माध्यमिक चरण	छाता अनुशासन
प्रकृति	नियमित, लिपिकीय	एनालिटिकल, जजमेंट की ज़रूरत होती है	सिद्धांतों का व्यवस्थित ज्ञान
उत्पादन	लेजर शेष	वित्तीय विवरण और उनकी व्याख्या	नियम, मानक और तकनीकें
द्वारा प्रदर्शित	बुक-कीपर (जूनियर स्टाफ)	लेखाकार	प्रोफेशनल्स और एकेडेमिक्स द्वारा स्टडी और डेवलप किया गया

आमतौर पर सिखाया जाने वाला क्रम है: **बुक-कीपिंग → अकाउंटिंग → अकाउंटेंसी** , हर एक पिछले वाले से बड़ा होता है।

लेखांकन के उद्देश्य और कार्य

1. ओरिजिनल एंट्री की बुक्स में ट्रांज़ैक्शन की **सिस्टमैटिक रिकॉर्डिंग।**
2. प्रॉफ़िट एंड लॉस अकाउंट या प्रॉफ़िट एंड लॉस स्टेटमेंट के ज़रिए ऑपरेशन के **नतीजों (प्रॉफ़िट या लॉस) का पता लगाना।**
3. बैलेंस शीट के ज़रिए **फाइनेंशियल स्थिति का पता लगाना।**
4. फ़ैसला लेने के लिए **जानकारी देना।**
5. सही रिकॉर्ड और इंटरनल कंट्रोल के ज़रिए **बिज़नेस एसेट्स को सुरक्षित रखना।**
6. **कानूनी ज़रूरतें पूरी करना** — कंपनीज़ एक्ट, 2013 (सेक्शन 128 अकाउंट बुक्स; सेक्शन 129 फाइनेंशियल स्टेटमेंट्स), इनकम-टैक्स एक्ट, 2025 (जिसने 1 अप्रैल 2026 से 1961 एक्ट की जगह ली) और GST कानून, सभी के लिए रिकॉर्ड रखना ज़रूरी है।

लेखांकन सूचना के उपयोगकर्ता

आंतरिक उपयोगकर्ताओं	जानकारी आवश्यक
मालिक / स्वामियों	लाभप्रदता, पूंजी पर प्रतिफल
प्रबंध	लागत, बजट, प्रदर्शन, योजना और नियंत्रण डेटा
कर्मचारी और ट्रेड यूनियन	स्टेबिलिटी, वेतन और बोनस देने की क्षमता (मजदूरी कोड, 2019)

बाहरी उपयोगकर्ताओं	जानकारी आवश्यक
निवेशक और संभावित निवेशक	जोखिम और प्रतिफल, लाभांश क्षमता
ऋणदाता और बैंक	सॉल्वेंसी, रीपेमेंट क्षमता, सुरक्षा
आपूर्तिकर्ता और व्यापार लेनदार	अल्पकालिक तरलता
ग्राहकों	आपूर्ति की निरंतरता, वारंटी
सरकार और रेगुलेटर (MCA, SEBI, RBI, टैक्स अथॉरिटी)	टैक्स असेसमेंट, कम्प्लायंस, नेशनल इनकम स्टैटिस्टिक्स
जनता और शोधकर्ता	सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभाव, CSR (धारा 135)

लेखांकन सूचना की गुणात्मक विशेषताएं

वैचारिक ढांचा (वित्तीय विवरणों की तैयारी और प्रस्तुति के लिए आईसीएआई का ढांचा और वित्तीय रिपोर्टिंग के लिए इंड एएस वैचारिक ढांचा , संशोधित 2020) विशेषताओं को दो समूहों में वर्गीकृत करता है:

- **मौलिक गुणात्मक विशेषताएँ: रेलिवेंस** (प्रेडिक्टिव वैल्यू, कन्फर्मेटरी वैल्यू, मैटेरियलिटी) और **फेथफुल रिप्रेजेंटेशन** (पूरा, न्यूट्रल, बिना गलती के)।
- **गुणात्मक विशेषताओं को बढ़ाना: तुलनीयता, सत्यापन, समयबद्धता और बोधगम्यता ।**
- **खर्च में कमी:** जानकारी का फ़ायदा उसे देने के खर्च को सही ठहराना चाहिए।

पुराने भारतीय ग्रंथों में भरोसेमंद जानकारी के बजाय भरोसेमंद होने की बात लिखी है ; 2010 में "समझदारी" को एक अलग खासियत के तौर पर हटा दिया गया था, लेकिन 2018 में (IASB) इसे न्यूट्रैलिटी ("अनिश्चितता की स्थिति में सावधानी") के सपोर्ट के तौर पर फिर से शामिल किया गया।

लेखांकन की शाखाएँ

शाखा	केंद्र	मुख्य उपयोगकर्ता
वित्तीय लेखांकन	लेन-देन रिकॉर्ड करना और सामान्य-उद्देश्य वाले वित्तीय विवरण तैयार करना	बाहरी उपयोगकर्ताओं
लागत लेखांकन	प्रति यूनिट, जॉब, प्रोसेस या कॉन्ट्रैक्ट की लागत का पता लगाना और कंट्रोल करना (यूनिट 3)	प्रबंध
प्रबंधन लेखांकन	प्लानिंग, फैसले लेने और कंट्रोल के लिए अकाउंटिंग डेटा का इस्तेमाल (यूनिट 5)	प्रबंध
कर लेखांकन	कर योग्य आय और कर देयता की गणना (इकाई 4)	कर अधिकारी, करदाता
सामाजिक उत्तरदायित्व लेखांकन	सामाजिक लागत और लाभ, ESG और BRSR रिपोर्टिंग	समाज, नियामक
मानव संसाधन लेखांकन	कर्मचारियों को संपत्ति के रूप में महत्व देना (लेव और श्वार्ट्ज मॉडल)	प्रबंधन, निवेशक
फोरेंसिक लेखांकन	धोखाधड़ी और विवादों की जांच	न्यायालय, जांचकर्ता

अकाउंटिंग का आधार: कैश बनाम एक्रुअल

आधार	नकद आधार	प्रोद्भवन (व्यापारिक) आधार
मान्यता	जब कैश मिलता है तो रेवेन्यू; जब कैश पेमेंट होता है तो खर्च	कमाई होने पर रेवेन्यू; खर्च होने पर एक्सपेंस
बकाया / प्रीपेड आइटम	अवहेलना करना	समायोजित
मेल मिलाना	पालन नहीं किया गया	पालन किया
कानूनी स्थिति	कंपनियों के लिए अनुमति नहीं है	**कंपनियों के लिए अनिवार्य** — धारा 128(1), कंपनी अधिनियम, 2013
उपयोगकर्ताओं	प्रोफेशनल्स, छोटी नॉन-प्रॉफिट संस्थाएं, सरकार (पारंपरिक)	सभी कंपनियाँ और अधिकांश व्यवसाय

कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 128 (1) के तहत हर कंपनी को अकाउंट बुक्स को **प्रोद्भवन आधार पर और डबल एंट्री सिस्टम के अनुसार रखना ज़रूरी है ।** हाइब्रिड आधार (इनकम कैश बेसिस पर, खर्च प्रोद्भवन आधार पर) का इस्तेमाल कभी-कभी प्रोफेशनल्स द्वारा किया जाता है, लेकिन यह कंपनियों के लिए स्वीकार्य नहीं है।

सामान्यत: स्वीकृत लेखा सिद्धांत (GAAP)

अकाउंटिंग प्रिंसिपल्स, ट्रांज़ैक्शन रिकॉर्ड करने में अकाउंटेंट्स द्वारा यूनिवर्सली अपनाए गए एक्शन के नियम हैं। वे **रेलिवेंट, ऑब्जेक्टिव और फीजिबिलिटी वाले होने चाहिए।** कॉन्सेप्ट , पोस्टुलेट , अजम्पशन , प्रिंसिपल और कन्वेंशन जैसे शब्दों का इस्तेमाल भारतीय टेक्स्टबुक्स में हल्के-फुल्के तरीके से किया जाता है; आम क्लासिफिकेशन यह है:

- **अकाउंटिंग कॉन्सेप्ट (बेसिक मान्यताएं/मान्यताएं):** बिज़नेस एंटिटी, मनी मेज़रमेंट, गोइंग कंसर्न, अकाउंटिंग पीरियड, कॉस्ट, डुअल एस्पेक्ट, रियलाइज़ेशन, एक्रुअल, मैचिंग, वेरिफ़ाएबल ऑब्जेक्टिव एविडेंस।
- **अकाउंटिंग के तरीके (प्रैक्टिस से बने रिवाज):** कंसिस्टेंसी, फुल डिस्क्लोजर, मेटेरियलिटी, कंजर्वेटिज्म (समझदारी)।

AS 1 (अकाउंटिंग पॉलिसी का डिस्क्लोज़र) तीन **बुनियादी अकाउंटिंग मान्यताओं के नाम बताता है — गोइंग कंसर्न, कंसिस्टेंसी और एक्रुअल ।** अगर उनका पालन किया जाता है, तो किसी डिस्क्लोज़र की ज़रूरत नहीं है; अगर उनमें से किसी का भी पालन नहीं किया जाता है, तो तथ्य का खुलासा किया जाना चाहिए। Ind AS 1 गोइंग कंसर्न और एक्रुअल को बुनियादी मान्यताओं के रूप में बताता है और प्रेजेंटेशन की कंसिस्टेंसी को अलग-अलग मानता है।

अकाउंटिंग कॉन्सेप्ट्स समझाए गए

व्यावसायिक इकाई अवधारणा

बिज़नेस को उसके मालिक से अलग एक एंटिटी माना जाता है। मालिक द्वारा लगाया गया कैपिटल उसके प्रति बिज़नेस की लायबिलिटी है; ड्रॉइंग इसे कम करते हैं। हालांकि सोल प्रोप्राइटरशिप या पार्टनरशिप का कोई अलग लीगल अस्तित्व नहीं होता, लेकिन इसका एक अलग अकाउंटिंग अस्तित्व होता है। एक कंपनी में दोनों होते हैं।

उदाहरण: अगर मालिक अपने बेटे की स्कूल फीस ₹20,000 बिज़नेस बैंक अकाउंट से भरता है, तो यह रकम ड्रॉइंग में डेबिट होगी, किसी खर्च में नहीं।

धन मापन अवधारणा

सिर्फ़ ऐसे ट्रांज़ैक्शन और इवेंट रिकॉर्ड किए जाते हैं जिन्हें पैसे में मापा जा सकता है। स्टाफ़ का हौसला, मैनेजमेंट की क्वालिटी या हड़ताल की धमकी, चाहे वे कितने भी ज़रूरी क्यों न हों, रिकॉर्ड नहीं किए जाते। एक लिमिट यह है कि पैसे की वैल्यू समय के साथ बदलती है (इन्फ्लेशन), जिसे हिस्टोरिकल-कॉस्ट स्टेटमेंट नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

गोइंग कंसर्न अवधारणा

माना जा रहा है कि कंपनी आने वाले समय में भी चलती रहेगी, और इसे बंद करने का कोई इरादा या ज़रूरत नहीं है। यह सही है:

- अचल परिसंपत्तियों का मूल्यांकन वसूली योग्य मूल्य के बजाय लागत में से मूल्य ह्रास घटाकर करना;
- चालू एवं गैर-चालू मदों में वर्गीकरण;
- प्रीपेड खर्चों का चार्ज टालना।

अगर गोइंग कंसर्न अज़म्प्शन वैलिड नहीं है (जैसे, कोई फर्म जो डिसॉल्यूशन के तहत है), तो एसेट्स का वैल्यूएशन नेट रियलाइज़ेबल वैल्यू पर किया जाता है।

लेखांकन अवधि अवधारणा (आवधिकता)

बिज़नेस की अनिश्चित लाइफ को रिज़ल्ट मापने के लिए अकाउंटिंग पीरियड में बांटा जाता है। कंपनीज़ एक्ट, 2013 का सेक्शन 2(41) **फाइनेंशियल ईयर को हर साल 31 मार्च** को खत्म होने वाला समय बताता है ; 1 जनवरी या उसके बाद बनी कंपनी अगले साल 31 मार्च को अपना पहला फाइनेंशियल ईयर बंद कर सकती है। ट्रिब्यूनल (NCLT) की मंज़ूरी से किसी विदेशी कंपनी की होल्डिंग/सब्सिडियरी के लिए एक अलग साल की इजाज़त है।

ऐतिहासिक लागत अवधारणा

एसेट्स को उन्हें खरीदने के लिए चुकाई गई कीमत (खरीदने की लागत और अचानक होने वाले खर्च) पर रिकॉर्ड किया जाता है, मार्केट वैल्यू पर नहीं। कॉस्ट का आधार ऑब्जेक्टिव और वेरिफ़ाई किया जा सकने वाला होता है। बाद में माप स्टैंडर्ड्स के तहत अलग हो सकता है (जैसे, Ind AS 16 के तहत रीवैल्यूएशन मॉडल; Ind AS 109 के तहत कुछ फ़ाइनेंशियल एसेट्स के लिए प्रॉफ़िट या लॉस के ज़रिए फ़ेयर वैल्यू)।

दोहरे पहलू की अवधारणा

हर ट्रांज़ैक्शन के दो पहलू होते हैं — एक डेबिट और एक बराबर क्रेडिट। यह डबल एंट्री सिस्टम की नींव है और **अकाउंटिंग इक्वेशन देता है** :

$$\text{Assets} = \text{Liabilities} + \text{Capital}$$

प्राप्ति (राजस्व मान्यता) अवधारणा

रेवेन्यू तब माना जाता है जब वह मिलता है, यानी, जब उसे पाने का अधिकार तय हो जाता है — आम तौर पर बिक्री के समय, जब ओनरशिप के रिस्क और रिवॉर्ड पास हो जाते हैं (AS 9) या जब कंट्रोल के ट्रांसफर से परफॉर्मेंस की ज़िम्मेदारी पूरी हो जाती है (Ind AS 115)। सिर्फ़ ऑर्डर मिलना रेवेन्यू नहीं है। एक्सेप्शन में कॉन्ट्रैक्ट रेवेन्यू शामिल है जिसे कम्प्लीशन के परसेंटेज बेसिस पर माना जाता है और इंस्टॉलमेंट सेल्स।

प्रोद्भव अवधारणा

रेवेन्यू और खर्च को उसी तरह पहचाना जाता है जैसे वे कमाए या किए गए हों, चाहे कैश मिला हो या पेमेंट हुआ हो। बकाया और पहले से चुकाए गए खर्च, जमा हुई इनकम और पहले से मिली इनकम इसी कॉन्सेप्ट का नतीजा हैं।

मिलान अवधारणा

किसी अकाउंटिंग पीरियड में हुए खर्चों को उस पीरियड के रेवेन्यू से मैच करके प्रॉफ़िट तय किया जाता है। मैचिंग कॉन्सेप्ट क्लोजिंग स्टॉक एडजस्टमेंट, डेप्रिसिएशन, डाउटफ़ुल डेट्स के लिए प्रोविज़न और डेफ़र्ड रेवेन्यू एक्सपेंडिचर को समझाता है। यह एक्रुअल और पीरियड कॉन्सेप्ट से निकलता है।

वस्तुनिष्ठ साक्ष्य अवधारणा

हर एंट्री के साथ वेरिफ़ाई किए जा सकने वाले डॉक्यूमेंट्स होने चाहिए — जैसे इनवॉइस, वाउचर, रसीदें, कॉन्ट्रैक्ट — ताकि रिकॉर्ड्स का ऑडिट किया जा सके।

अकाउंटिंग कन्वेंशन की व्याख्या

स्थिरता

एक बार अपनाए गए अकाउंटिंग के तरीके (जैसे, इन्वेंट्री के लिए FIFO, डेप्रिसिएशन के लिए WDV) को हर साल फॉलो करना चाहिए ताकि समय के साथ नतीजे तुलनीय हों। बदलाव की इजाज़त तभी दी जाती है जब कानून के हिसाब से, अकाउंटिंग स्टैंडर्ड के हिसाब से, या अगर इसका नतीजा ज़्यादा सही प्रेजेंटेशन हो; बदलाव और उसके असर का खुलासा किया जाना चाहिए (AS 5 / Ind AS 8)।

पूर्ण प्रकटीकरण

सभी ज़रूरी जानकारी फाइनेंशियल स्टेटमेंट और नोट्स में बताई जानी चाहिए। कंपनीज़ एक्ट, 2013 (शेड्यूल III), Ind AS और SEBI (LODR) रेगुलेशन, 2015 इस कन्वेंशन को लागू करते हैं — जैसे, कंटिंजेंट लायबिलिटीज़, रिलेटेड पार्टी ट्रांज़ैक्शन, अकाउंटिंग पॉलिसी और रिपोर्टिंग पीरियड के बाद की घटनाएँ।

मादा

कोई आइटम तब मैटीरियल होता है जब उसकी जानकारी न होने या गलत जानकारी से यूज़र्स के आर्थिक फैसलों पर असर पड़ सकता है। गैर-मैटीरियल आइटम को सबसे आसान तरीके से देखा जा सकता है (जैसे, ₹200 का स्टेपलर खर्च के तौर पर लिया जाता है, हालांकि यह सालों तक चलता है)। मैटीरियलिटी, रकम और तरह दोनों के प्रोफेशनल फैसले का मामला है।

रूढ़िवाद (विवेक)

"किसी मुनाफ़े की उम्मीद न करें, लेकिन सभी संभावित नुकसानों के लिए तैयारी रखें।" उदाहरण:

- समापन स्टॉक का मूल्यांकन **लागत या शुद्ध वसूली योग्य मूल्य, जो भी कम हो, पर किया जाएगा** ;

- संदिग्ध ऋणों और देनदारों पर छूट के लिए प्रावधान;
- आकस्मिक परिसंपत्तियों का रिकॉर्ड न करना, बल्कि आकस्मिक देनदारियों का खुलासा करना;
- इनटैन्जिबल एसेट्स को उनके उपयोगी जीवन के दौरान अमॉर्टाइज़ करना।

बहुत ज़्यादा कंज़र्वेटिज़्म से **सीक्रेट रिज़र्व बनते हैं** और भरोसेमंद रिप्रेजेंटेशन का उल्लंघन होता है; मॉडर्न स्टैंडर्ड न्यूट्रैलिटी को पसंद करते हैं।

अवधारणाएँ बनाम परंपराएँ

आधार	लेखांकन अवधारणाएँ	लेखांकन परंपराएँ
अर्थ	बुनियादी मान्यताएँ जिन पर अकाउंटिंग आधारित है	रीति-रिवाज और परंपराएँ अभ्यास के माध्यम से विकसित हुईं
मूल	अकाउंटिंग बॉडीज़ और थ्योरी द्वारा निर्धारित	समय के साथ उपयोग से विकसित
वर्दी	सभी फर्मों में एक समान	फर्मों के बीच भिन्न हो सकता है
उदाहरण	एंटिटी, गोइंग कंसर्न, कॉस्ट, डुअल एस्पेक्ट, एक्रुअल	संगति, प्रकटीकरण, भौतिकता, रूढ़िवाद

एक भाषा के रूप में अकाउंटिंग और इसकी सीमाएँ

अकाउंटिंग को **बिज़नेस की भाषा कहा जाता है** क्योंकि यह यूज़र्स को बिज़नेस के रिज़ल्ट और स्थिति के बारे में बताती है। इसकी लिमिटेशन हैं:

1. यह केवल मॉनेटरी ट्रांज़ैक्शन (मनी मेज़रमेंट) रिकॉर्ड करता है।
2. हिस्टॉरिकल कॉस्ट स्टेटमेंट प्राइस लेवल में बदलाव को नज़रअंदाज़ करते हैं।
3. इसमें अनुमान और फैसला (डेप्रिसिएशन, प्रोविज़न) शामिल हैं, इसलिए नतीजे एकदम सही नहीं होते।
4. विंडो ड्रेसिंग और क्रिएटिव अकाउंटिंग संभव है।
5. यह मैनेजमेंट की क्वालिटी जैसे क्वालिटेटिव फैक्टर्स को नहीं दिखाता है।

लेखांकन का विकास

अवधि	विकास
प्राचीन भारत	कौटिल्य के अर्थशास्त्र (लगभग 4th सेंचुरी BCE) में अकाउंट्स के मेंटेनेंस, शाही खजाने के ऑडिट और अकाउंटेंट के कामों के बारे में बताया गया है; भारतीय व्यापारियों का बही-खाता सिस्टम रसीदों (जमा) और पेमेंट (नाम) को रिकॉर्ड करता है।
1494	लुका पसिओली ने डबल एंट्री पर पहला प्रिंटेड ग्रंथ प्रकाशित किया (वेनिस)
19 वीं सदी	इंडस्ट्रियल क्रांति और जॉइंट स्टॉक कंपनियों की वजह से पब्लिश्ड अकाउंट्स और ऑडिट की ज़रूरत पैदा हुई; UK कंपनीज़ एक्ट्स
1949	चार्टर्ड अकाउंटेंट्स एक्ट; ICAI की स्थापना (1 जुलाई 1949)
1959	कॉस्ट एंड वर्क्स अकाउंटेंट्स एक्ट के तहत इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एंड वर्क्स अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (अब आईसीएमएआई)
1977	आईसीएआई का लेखा मानक बोर्ड
2013	कंपनीज़ एक्ट, 2013 ने 1956 एक्ट की जगह ली; शेड्यूल III फ़ॉर्मैट; NFRA दिया गया
2015–17	भारतीय लेखा मानक अधिसूचित और चरणबद्ध तरीके से लागू
2023 के बाद	कंपनी (अकाउंट्स) रूल्स, 2014 के रूल 3(1) के तहत अकाउंटिंग सॉफ्टवेयर में 1 अप्रैल 2023 से ज़रूरी ऑडिट ट्रेल (एडिट लॉग); टॉप लिस्टेड कंपनियों के लिए BRSR कोर

लेखांकन सिद्धांत दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	ज़ोर
वर्णनात्मक (प्रेरक)	देखे गए अभ्यास से सिद्धांत प्राप्त करता है
मानक (निगमनात्मक)	अकाउंटिंग कैसी होनी चाहिए, यह उद्देश्यों और सिद्धांतों से पता चलता है
सकारात्मक लेखांकन सिद्धांत (वाट्स और ज़िमरमैन, 1978-86)	मैनेजमेंट की अकाउंटिंग पॉलिसी (बोनस प्लान, डेट कवनेंट, पॉलिटिकल कॉस्ट हाइपोथीसिस) चुनने के तरीके को समझाता है और अनुमान लगाता है।
निर्णय-उपयोगिता दृष्टिकोण	जानकारी से यूज़र्स को आर्थिक फ़ैसले लेने में मदद मिलनी चाहिए (कॉन्सेप्चुअल फ्रेमवर्क के आधार पर)
प्रबंधन दृष्टिकोण	अकाउंटिंग से पता चलता है कि मैनेजमेंट ने सौंपे गए रिसोर्स के लिए अपनी ज़िम्मेदारी कैसे निभाई है
घटनाएँ दृष्टिकोण (सॉर्टर, 1969)	इवेंट्स की रिपोर्ट करें, जिससे यूज़र्स उन्हें एग्रीगेट कर सकें

अकाउंटेंट की भूमिका और प्रोफेशनल एथिक्स

आज का अकाउंटेंट एक **रिकॉर्ड-कीपर, एनालिस्ट, सलाहकार और एश्योरेंस प्रोवाइडर होता है**। ICAI का कोड ऑफ़ एथिक्स (12वां एडिशन) बुनियादी सिद्धांत बताता है: **ईमानदारी, निष्पक्षता, प्रोफेशनल काबिलियत और सही देखभाल, गोपनीयता और प्रोफेशनल व्यवहार**। कंपनीज़ एक्ट, 2013 के सेक्शन 143 के तहत स्टैच्युटरी ऑडिटर को बुक्स, इंटरनल फाइनेंशियल कंट्रोल्स और फ्रॉड (सेक्शन 143(12)) पर रिपोर्ट देना ज़रूरी है।

लेखांकन और प्रौद्योगिकी

- **कंप्यूटराइज्ड अकाउंटिंग** (टैली प्राइम, SAP, ओरेकल, ज़ोहो बुक्स): वाउचर एक बार एंटर किए जाते हैं; जर्नल, लेजर, ट्रायल बैलेंस और स्टेटमेंट

ऑटोमैटिकली जेनरेट होते हैं।

- **GST ई-इनवॉइसिंग: ₹5 करोड़** से ज़्यादा के कुल टर्नओवर वाले बिज़नेस के लिए ज़रूरी (1 अगस्त 2023 से); इनवॉइस को इनवॉइस रजिस्ट्रेशन पोर्टल से एक इनवॉइस रेफरेंस नंबर (IRN) मिलता है।
- **ऑडिट ट्रेल: अकाउंटिंग सॉफ्टवेयर का उपयोग करने वाली प्रत्येक कंपनी को प्रत्येक परिवर्तन का एक संपादन लॉग** रिकॉर्ड करने की सुविधा के साथ सॉफ्टवेयर का उपयोग करना चाहिए , जिसे अक्षम नहीं किया जा सकता (नियम 3 (1), कंपनी (लेखा) नियम, 2014 के प्रावधान)।
- **इलेक्ट्रॉनिक रूप में पुस्तकों को भारत में भौतिक रूप से स्थित सर्वरों पर रखा जाना चाहिए और दैनिक** बैकअप लिया जाना चाहिए (नियम 3(5), जैसा कि 2022 में संशोधित किया गया है)।
- लिस्टेड और बड़ी कंपनियों के लिए MCA के साथ फाइनेंशियल स्टेटमेंट की **XBRL फाइलिंग ।**

प्रैक्टिस में कॉन्सेप्ट्स — कौन सा कॉन्सेप्ट लागू होता है?

परिस्थिति	अवधारणा/परंपरा
₹50 लाख में खरीदी गई ज़मीन की कीमत ₹50 लाख दिखाई गई है, जबकि इसका बाज़ार मूल्य ₹80 लाख है	ऐतिहासिक खर्च
मुकदमे में होने वाले नुकसान के लिए प्रावधान किया जाता है, लेकिन होने वाले लाभ को दर्ज नहीं किया जाता है।	रूढ़िवाद (विवेक)
अप्रैल में दिया गया मार्च का किराया मार्च के साल के खर्च के तौर पर दिखाया जाता है।	उपार्जन / मिलान
मालिक के बिज़नेस से पेमेंट किए गए पर्सनल कार इंश्योरेंस को ड्रॉइंग माना जाता है	व्यावसायिक इकाई
एक फर्म हर साल WDV डेप्रिसिएशन का इस्तेमाल करती है	स्थिरता
₹300 की कीमत वाले एक कैलकुलेटर को खर्च में जोड़ा गया है	मात्रा
फिक्स्ड एसेट्स को उनकी फोर्स्ड-सेल वैल्यू पर नहीं दिखाया जाता है	वर्तमान चिन्ता
आकस्मिक देनदारियों को नोट के रूप में दिखाया जाता है	पूर्ण प्रकटीकरण
अकाउंट्स 31 मार्च 2026 को खत्म हुए साल के लिए तैयार किए गए हैं	लेखा अवधि
कर्मचारियों की वफ़ादारी रिकॉर्ड नहीं की जाती	धन माप
बिक्री से होने वाला रेवेन्यू तब रिकॉर्ड किया जाता है जब सामान डिलीवर होता है, न कि जब ऑर्डर मिलता है	वसूली

महत्वपूर्ण तथ्यों

1. **प्रोद्भवन आधार पर** और **दोहरी प्रविष्टि प्रणाली** पर खाता पुस्तकें ; पंजीकृत कार्यालय में रखी गईं; **8 वर्षों के लिए संरक्षित ।**
2. AS 1 फंडामेंटल अकाउंटिंग मान्यताएं: **गोइंग कंसर्न, कंसिस्टेंसी, एक्रुअल** ; डिस्क्लोजर की ज़रूरत तभी होती है जब उनका पालन न किया जाए।
3. धारा 2(41) के अंतर्गत वित्तीय वर्ष **31 मार्च को समाप्त होता है ।**
4. **एएए (1966) परिभाषा**: "आर्थिक जानकारी की पहचान, मापन और संचार करना"।
5. बुनियादी क्वालिटेटिव खासियतें (कॉन्सेप्चुअल फ्रेमवर्क): **काम का होना** और **भरोसेमंद दिखाना** ; बढ़ाना: तुलना, वेरिफ़िकेशन, समय पर होना, समझने में आसानी।
6. **कंजर्वेटिज्म**: **कॉस्ट और नेट रियलाइजेबल वैल्यू में से जो भी कम हो , उस पर स्टॉक ।**
7. मैचिंग कॉन्सेप्ट क्लोजिंग स्टॉक, डेप्रिसिएशन, आउटस्टैंडिंग और प्रीपेड एडजस्टमेंट को सही ठहराता है।

परीक्षक जाल

- **गलत:** "बिज़नेस एंटिटी कॉन्सेप्ट सोल प्रोप्राइटर पर लागू नहीं होता क्योंकि उसकी लायबिलिटी अनलिमिटेड होती है।" **सही:** एंटिटी कॉन्सेप्ट अकाउंटिंग के मकसद से हर तरह के बिज़नेस पर लागू होता है; लीगल सेपरेशन एक अलग मामला है।
- **गलत:** "एक जैसा होने का मतलब है कि कोई तरीका कभी नहीं बदला जा सकता।" **सही:** किसी कानून, स्टैंडर्ड या बेहतर प्रेजेंटेशन के लिए, उसके नेचर और असर के डिस्क्लोज़र के साथ बदलाव की इजाज़त है।
- **गलत:** "कस्टमर से एडवांस मिलना रेवेन्यू है।" **सही:** यह एक लायबिलिटी (एडवांस में मिली इनकम) है जब तक सामान या सर्विस डिलीवर नहीं हो जाती।
- **गलत:** "गोइंग कंसर्न का मतलब है कि बिज़नेस हमेशा चलता रहेगा।" **सही:** इसका मतलब है कि बिज़नेस आने वाले समय तक चलता रहेगा , और लिक्विडेशन का कोई इरादा या ज़रूरत नहीं है।
- कैश बेसिस की इजाज़त **नहीं है** ; एग्ज़ामिनर अक्सर ध्यान भटकाने के लिए "कंपनी के ऑप्शन पर कैश या एक्रुअल" ऑफ़र करते हैं।

एक नज़र में संशोधन

- अकाउंटिंग = पहचान → माप → रिकॉर्ड → क्लासिफ़ाई → समराइज़ → एनालाइज़ → इंटरप्रेट → कम्युनिकेट।
- बही-खाता (रिकॉर्डिंग) ⊂ लेखांकन ⊂ लेखाकर्म।
- **कॉन्सेप्ट**: एंटिटी, मनी मेज़रमेंट, गोइंग कंसर्न, पीरियड, कॉस्ट, डुअल एस्पेक्ट, रियलाइज़ेशन, एक्रुअल, मैचिंग, ऑब्जेक्टिव एविडेंस।
- **कन्वेंशन**: कंसिस्टेंसी, फुल डिस्क्लोजर, मैटेरियलिटी, कंजर्वेटिज्म।

- **यूज़र्स**: इंटरनल (मालिक, मैनेजमेंट, कर्मचारी) और एक्सटर्नल (इन्वेस्टर, लेंडर, क्रेडिटर, सरकार, पब्लिक).
- कैश बेसिस बनाम एक्रुअल बेसिस; कंपनियों को एक्रुअल का इस्तेमाल करना चाहिए।